पठन स्तर २

कितनी बड़ी माचिस!

Author: Arvind Gupta
Illustrator: Meenal Singh
Translator: Manisha Chaudhry

प्रेम दूसरी कक्षा में पढता था। वह घर के पास के निगम विद्यालय में जाता था। उसकी शिक्षिका कोरोज़ कोई नयी बातें पढ़ना-पढ़ाना अच्छा लगता था।

एक दिन उन्होंने बच्चों से एक खाली माचिस की डिबिया ढूँढ कर उसे भरने के लिए कहा।

“एक हफ्ते में जितनी चीज़ें इस माचिस की डिबिया में भर सकते हो, भरो। जो सबसे ज़्यादा अलग अलग चीज़ें इसमें भर पाएगा उसे अगले हफ़्ते इनाम दिया जायेगा।”

प्रेम को यह बात अच्छी लगी।

उसने घर जा कर डिबिया में पेंसिल छीलने वाला शार्पनर और मिटाने वाली रबड़ को रखना चाहा। उनमें से एक चीज़ ही उसमें समा पायी। दोनों चीज़ें ज़्यादा बड़ी थीं।

प्रेम सोचने लगा। मैं कौन सी चीज़ें इसमें भर सकता हूँ?

गृह कार्य करते हुए उसकी पेंसिल टूट गयी। उसकी नोक का छोटा सा काला टुकड़ा प्रेम ने माचिस की डिबिया में रख लिया।

पेंसिल छील कर लकड़ी के बुरादे का एक टुकड़ा भी डिबिया में रख लिया।

प्रेम बड़े ध्यान से छोटी छोटी चीज़ें तलाशने लगा।

माँ रसोई में पोहा बना रही थीं। उसकी खुशबू आयी।

रसोई में से एक राई का दाना, एक जीरे का दाना, एक लाल मिर्च का बीज उसने डिबिया में रखा। साथ ही एक एक चावल का, चीनी का और गेहूँ का दाना उसने रख लिया।

मक्की, बाजरा, मूँग और अन्य दालों के दाने भी उसने डिबिया में रख लिए।

अगले दिन उसने एक छोटा रबड़ बैंड, ऊन का टुकड़ा, एक बाल और एक धागे का टुकड़ा रखा।

प्रेम अब हर समय छोटी, नन्ही चीज़ें ढूँढता रहता।

अगले दिन उसने गुलाब का एक काँटा, सूरजमुखी की एक पंखुड़ी, एक छोटी सी डंडी, चाय की पत्ती, एक इमली का पत्ता और एक छोटा कंकड़ डाला।

माचिस की डिबिया में अभी भी थोड़ी जगह बाकी थी।

इसलिए प्रेम ने कागज़ का एक टुकड़ा,
एक कागज़ का क्लिप, एक सुई, एक मोती,
एक बटन उसमें और डाले।

माचिस की डिबिया अभी भी भरी नहीं थी।

हफ़्ते के आखिरी दिन प्रेम ने नीबू का एक बीज, संतरे का एक बीज और कद्दू का एक बीज डाला। अब माचिस की डिबिया ठसाठस भरी थी। उसमें ज़रा भी जगह नहीं बची थी।

विद्यलाय में सभी बच्चों ने अपनी अपनी डिबिया की चीज़ें गिनीं।

कुछ बच्चों ने ५० चीज़ें गिनी। एक बच्चे ने १०० चीज़ें
भरी थीं।

जब प्रेम की बारी आयी उसने माचिस की डिबिया को उठा कर हिलाया। उसमें से कोई आवाज़ नहीं आयी क्योंकि वह पूरी भरी हुई थी।

जब प्रेम ने अपनी माचिस की डिबिया खाली की तो सब देखते ही रह गए।

उसने १५० चीज़ें उसमें भर दी थीं।
कोई और इतनी चीज़ें
नहीं भर पाया था।
इस तरह प्रेम ने रंगीन क्रेयॉन
पेंसिलों का एक नया डिब्बा ईनाम
में पाया।

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Story Attribution:

This story: कितनी बड़ी माचिस! is translated by Manisha Chaudhry . The © for this translation lies with Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'The Big, Big Matchbox', by Arvind Gupta . © Pratham Books , 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

'Kitni Badi Maachis!' has been published on StoryWeaver by Pratham Books. The development of this book has been supported by Parag, an initiative of Tata Trusts. www.prathambooks.org

Illustration Attributions:

Cover page: Schoolchildren with matchboxes, by Meenal Singh © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: Woman and children with matchbox, by Meenal Singh © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Woman bends sideways, by Meenal Singh © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: Boy sits at table with cat, by Meenal Singh © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Cat and pencil, by Meenal Singh © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: Boy smells food, by Meenal Singh © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: Houses, trees, roads, by Meenal Singh © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: Board pin, pair of hands, button, by Meenal Singh © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: Red and white matchbox, by Meenal Singh © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: Open matchbox filled with things by Meenal Singh © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions
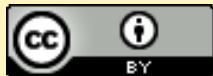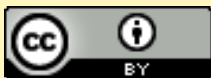
Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

The development of this book has been supported by Parag, an initiative of Tata Trusts.

कितनी बड़ी माचिस!

(Hindi)

प्रेम और उसके साथियों को एक छोटी सी डिबिया को ले कर एक बड़ा काम करने को दिया गया।
क्या आप भी उनके जैसा काम कर के देखना चाहेंगे?

यह पठन स्तर २ की किताब है, उन बच्चों के लिए जो सरल शब्द पढ़ लेते हैं और थोड़ी मदद से नए शब्द भी पढ़ सकते हैं।

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!